Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to confer Bharat Ratna on Raja Mahendra Pratap - Laid.

म 3

श्री राजेश कुमार दिवाकर (हाथरस): मैं सरकार का ध्यान हाथरस के राजा महेन्द्र प्रताप सिंह की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जो कि एक सच्चे देशभक्त, क्रांतिकारी, पत्रकार और समाज सुधारक थे। उन्होंने 29 अक्टूबर, 1915 को अफगानिस्तान में अस्थाई आजाद हिन्द सरकार" का गठन किया। अस्थाई सरकार के वह स्वयं राष्ट्रपति थे। उन्होंने अपनी आर्य परम्परा का निर्वाह करते हुए 32 वर्ष तक देश के बाहर रहकर अंग्रेज सरकार को न केवल तरह-तरह से ललकारा, बल्कि अफगानिस्तान में बनाई अपनी "आजाद हिन्द फौज" द्वारा कबाईली ईलाकों पर हमला करके कई इलाके अंग्रेजों से छीनकर अपने अधिकार में ले लिये थे।

राजा महेन्द्र प्रताप जीवनपर्यन्त मानवता का प्रचार करते रहे। वह जाति, पंथ, रंग आदि भेदों को मानवता के विरुद्ध घोर अन्याय, पाप और अत्याचार मानते थे। उन्होंने "अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के विस्तार के लिए अपनी जमीन दान में दी और इसके अलावा वृन्दावन में 80 एकड़ का एक बाग "आर्य प्रतिनिधि सभा" को दान में दिया था, जिसमें "आर्य समाज गुरुकुल' और "राष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित हैं। यहीं नहीं, उन्होंने वृन्दावन में प्रेम महाविद्यालय की स्थापना भी की, जो कि भारत में प्रथम तकनीकी शिक्षा का केन्द्र था।

वह जातिगत, छुआछूत के घोर विरोधी थे और भारतीयों को उच्च शिक्षा देने के पक्षधर थे और इसीलिए शैक्षिक संस्थानों की हमेशा मदद किया करते थे। उनकी राष्ट्रवादी सोच के कारण कुछ विरोधी उन पर आर.एस.एस. का एजेंट होने का आरोप लगाते रहते थे और राजनीतिक कारणों से राजा महेन्द्र प्रताप को इतिहास में वो स्थान नहीं मिला, जिसके वे अधिकारी थे।

पिछले दिनों हमारे लोकप्रिय प्रधान मंत्री आदरणीय मोदी जी ने काबुल की संसद में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि "फ्रंटियर या सीमांत गांधी को जानने वाले लाखों लोग मिल जायेंगे, लेकिन राजा महेन्द्र प्रताप का नाम कितने लोग जानते हैं। उनके और अफगानिस्तान के किंग के बीच बात-चीत को भाईचारे की भावना का प्रतीक बताया।"

उनके देश प्रेम व वीरता की गाथा इतिहास में दबी रह गयी है। मेरे संसदीय क्षेत्र के लोगों की भावनाओं को महसूस करते हुए मेरी माँग है कि ऐसे राष्ट्रवादी वीर सपूत को भारत रत्न से विभूषित किया जाना चाहिए।

हाथरस की जनता की यह माँग है कि हाथरस जनपद के कलेक्ट्रेट परिसर में उनकी विशाल मूर्ति स्थापित की जाए, ताकि उनके बलिदान और यादों को वर्षों तक याद किया जा सके।

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह मुरसान राज्य से आकर हाथरस राज्य के राजा बने थे। अतः मुरसान के स्थानीय लोगों की यह भी माँग है कि मुरसान रेलवे स्टेशन का नाम राजा महेन्द्र प्रताप के नाम से होना चाहिए।